Higeo®
मार्कफील्ड ॲग्रोटेक
ए-12, अतिरिक्त एमआईडीसी, छ. संभाजी नगर रोड, जालना - 431 203 (MS) मोबाइल 9404470525

पिक:- कांदा

वाण :- बसवंत-780, फुले समर्थ, नासिक रेड, लाइट रेड, पुना फुरसुंगी, अर्का निकेतन, सुपर पुना फुरसुंगी, सुपर केसर गोल्ड, भीमा सुपर, भीमा किरण, एस - 11, एस - 21, एस - 51, व्हाइट ग्लोब, सुपर किंग, गुलाबी फुरसुंगी, महाराजा सुपर, सुपर रेड, धनवान, धनराज, बलवान, बाहुबली, ब्रम्हा, कार्तिक सुपर, महारुद्र पावर गोल्ड प्लस, अर्ली गोल्ड, अर्ली प्लस, सार्थक गुलाबी फुरसुंगी गोल्ड प्लस, सार्थक गुलाबी फुरसुंगी सुपर.

हवामान :- कांदा हे हिवाळी हंगामातील पिक असून महाराष्ट्रातील सौम्य हवामानात कांद्याची 2 ते 3 पिके घेतली जातात. कांदा लागवडीपासून 1 ते 2 महिने हवामान थंड लागते. कांदा पोसायला लागताना तापमानातील वाढ कांदा वाढीस उपयुक्त असते.

जमीन :- कांदा पिकासाठी जमीन सुपीक, मध्यम ते मध्यम भारी, रेतीमिश्रित तसेच पाण्याचा चांगला निचरा होणारी निवडावी.

पेरणीची वेळ:- महाराष्ट्रात कांद्याची लागवड खरीप हंगामात जून ते जुलै, रब्बी हंगामात ऑक्टोबर-नोव्हेंबर ते फेब्रूवारी आणि उन्हाळी हंगामात जानेवारी ते फेब्रुवारी महिन्यात करतात.

पेरणीसाठी लागणारे बियाणे:- प्रति एकरी कांदा लागवडीसाठी 3 किलो बियाणे लागते.

दोन ओळीतील अंतर:- कांदा लागवड करताना दोन ओळीतील अंतर 22.5 सें. मी व दोन रोपांतील अंतर 10 सें. मी ठेवावे.

रासायनिक खत मात्रा व खत देण्याचा कालावधी व वेळ खतासोबत फरटेरा (डूपौंड) 4 किलो प्रति एकरी किंवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) 2.5 किलो प्रति एकरी या दराने वापरल्यास सुमारे 21 दिवस मावा व तुडतुडे पासून चांगले संरक्षण मिळते.

अ. क्र.	रासायनिक खत प्रति हेक्टरी	नत्र (कि. ग्रॅ.)	स्फुरद (कि. ग्रॅ.)	पालाश (कि. ग्रॅ.)
1	स्थलांतराच्या वेळी	50	50	100
2	स्थलांतरा नंतर 25-30 दिवसांनी	25	00	00
3	दुसऱ्या मात्रे नंतर 25-30 दिवसांनी	25	00	00
	एकूण	100	50	100

रोग व कीड नियंत्रण

खतासोबत फरटेरा (डूपौंड) 4 किलो प्रति एकरी किंवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) 2.5 किलो प्रति एकरी या दराने वापरल्यास सुमारे 21 दिवस मावा व तुडतुडे पासून चांगले संरक्षण मिळते.

अ. क्र.	रोग/ कीड	औषधाचे नाव	मात्रा प्रति लि पाण्यात
1	मर रोग	कॅप्टन	02 ग्रॅ प्रति लि
2	जांभळा करपा	डायथेन एम ४५	2.5 ग्रॅ प्रति लि
		वेस्पा + कवच	01 मि. ली + 03 ग्रॅ प्रति लि
3	तपकिरी करपा	बाविस्टिन	02 ग्रॅ प्रति लि
4	काळा करपा	डायथेन एम ४५	2.5 ग्रॅ प्रति लि
		वेस्पा + कवच	01 मि. ली + 03 ग्रॅ प्रति लि
5	पांढरीसड	बाविस्टिन	02 ग्रॅ प्रति लि
6	डाऊनी मिल्ड्यू	सेक्टीन	03 ग्रॅ प्रति लि
7	मुळकुज	थायरम	02 ग्रॅ प्रति लि
8	फुलकिडे	रिजेन्ट	02 मि. ली प्रति लि.
		अँक्टरा	06 ग्रॅ प्रति 15 लि.
		डेसिस	01 मि. ली प्रति लि.

पाणी नियोजन:- कांदा पिकाला नियमित पाणी देणे महत्वाचे असते. खरीप हंगामात 10 ते 12 दिवसाच्या अंतराने तर उन्हाळी व रबी हंगामात 6 ते 8 दिवसांनी जमिनीच्या मगदुराप्रमाणे पाणी द्यावे.

आंतरमशागत:- रोपांच्या लागवडीनंतर शेतात तण दिसल्यास हलकी खुरपणी करावी. काढणीपूर्वी 3 आठवडयांअगोदर पाणी बंद करावे म्हणजे पानातील रस कांद्यामध्ये लवकर उतरतो आणि माना पडून कांदा काढणीस तयार होतो.

काढणी व उत्पादन:- कांदयांचे पीक लागवडीनंतर 03 ते 4.5 महिन्यात काढणीस तयार होते. कांद्याची पात पिवळी पडून कांदा मानेत पिवळा पडतो व पात आडवी पडते. यालाच मान मोडणे असे म्हणतात. 60 ते 75 टक्के माना मोडल्यावर कांदा काढणीस पक्व झाला असे समजावे. कुदळीच्या साहारूयाने आजूबाजूची जमिनी सैल करून कांदे उपटून काढावेत. काढणीनंतर 4, 5 दिवसांनी कांदा पातीसकट शेतात लहान लहान ढिगा-याच्या रूपाने ठेवावा. नंतर कांदयाची पात व मुळे कापावे. पात कापताना 3 ते 4 सेमी लांबीचा देठ ठेवून पात कापावी. यानंतर कांदा 4 ते 5 दिवस सावलीत सुकवावा.

टीप: वरील दिलेली माहिती हि आमच्या संशोधण केंद्रात घेतलेल्या चाचण्या वरून दिलेली आहे. यात जमीन, भोगोलिक हवामान, पिकाची नियोजन पद्धती इत्यादी कारणामुळे या मध्ये बदल होऊ शकतो.

Higeo®
मार्कफील्ड ॲग्रोटेक
ए-12, अतिरिक्त एमआईडीसी, छ. संभाजी नगर रोड, जालना - 431 203 (MS) मोबाइल 9404470525

प्याज (ओनियन)

किस्में :- बसवंत-780, फुले समर्थ, नासिक रेड, लाइट रेड, पुना फुरसुंगी, अर्का निकेतन, सुपर पुना फुरसुंगी, सुपर केसर गोल्ड, भीमा सुपर, भीमा किरण, एस - 11, एस - 21, एस - 51, व्हाइट ग्लोब, सुपर किंग, गुलाबी फुरसुंगी, महाराजा सुपर, सुपर रेड, धनवान, धनराज, बलवान, बाहुबली, ब्रम्हा, कार्तिक सुपर, महारुद्र पावर गोल्ड प्लस, अर्ली गोल्ड, अर्ली प्लस, सार्थक गुलाबी फुरसुंगी गोल्ड प्लस, सार्थक गुलाबी फुरसुंगी सुपर।

प्याज हेतु जलवायु: प्याज कि फसल के लिये ऐसे जलवायू कि अवश्यकाता होती हें जो न बहुत गर्म हो और नाही ठंडी. अच्छे कंद बनणे के लिये बडे दिन तथा कूच अधिक तापमान होणा अच्छा राहता हे.

उपयुक्त भूमि: प्याज की खेती हर प्रकार की भूमि में की जा सकती है| प्याज की अधिकतम उपज के लिए जीवांशयुक्त उचित जल निकास वाली बलुई दोमट या दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है|

भूमि की तैयारी: प्याज की अच्छी पैदावार के लिए खेत की चार से पांच बार अच्छी जुताई करनी चाहिए| प्रत्येक जुताई के बाद पाटा लागाकर मिट्टी को भूरभूरी बना लेनी चाहिए| भूमि की सतह से 15 सेंटीमीटर की उंचाई पर 1.2 मीटर चौड़ी पट्टी पर रोपाई की जानी चाहिए| इसके लिए खेत को रेज्ड-बेड सिस्टम से भी तैयार किया जा सकता है|

नर्सरी में बीज की बोआई का समय: बोआई का समय- खरीफ प्याज के लिए बीज की बोआई पूरे जून महीने में की जाती है और रबी प्याज के लिए मध्य अक्टूबर से नवम्बर में बोआई की जाती है| बीज की मात्रा- प्रति हेक्टर रोपाई के लिए 8 से 10 किलो की आवश्यकता होती है|

पौधा तैयार करना: बीज को ऊँची उठी हुई क्यारियों में बोया जाता है| क्यारियों की चौड़ाई 1 से 1.25 मीटर और लम्बाई सुविधानुसार रखते हैं| वैसे 3 से 5 मीटर लम्बी क्यारियाँ सुविधाजनक होती है| एक हेक्टेयर रोपाई के लिए 70 क्यारियाँ (1.0 X 5.0 मीटर आकार की) पर्याप्ति होती है|

रोपाई की दूरी- रोपाई करते समय कतारों की दूरी 22.5 सेंटीमीटर तथा कतार में पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर रखते हैं|

खाद एवं उर्वरक:- खाद के साथ फरटेरा (डूपौंड) 4 किलो प्रति एकडं अथवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) 2.5 किलो प्रति एकडं इस प्रमाण से एस्तेमाल करणे से 21 दिन तक रस चुसानेवाले किट से संरक्षण मिलता है.

क्र.	रासायनिक खाद प्रति हेक्टेयर	नत्रजन (कि.ग्रा.)	फास्फोरस (कि.ग्रा.)	पोटाश (कि.ग्रा.)
1	रोपाई के समय	50	50	100
2	रोपाई के 25-30 दिन बाद	25	00	00
3	दूसरी मात्रा के 25-30 दिन बाद	25	00	00
	कुल	100	50	100

रोग और कीट नियंत्रण:- स्टिकर (0.5-01%) के साथ छिडकावं करे.

क्र.	रोग/ कीट	नियंत्रण	मात्रा प्रति ली पाणी में
1	थ्रिप्स	डेसिस	01 मि. ली प्रति ली
		डेलिगेट	01 मि. ली प्रति लि.
2	पर्ण सुरंगक किट (लिफ़ माइनर)	कराटे	01 मि. ली प्रति लि.
		ट्रेसर	0.5 मि. ली प्रति लि.
3	आद्रगलन	ॲलिएट	02 ग्रॅ प्रति लि.
		रेडोमिल गोल्ड	2 ग्रॅ. प्रति लि.
4	बैंगनी धब्बा रोग (पर्पल ब्लॉच)	डायथेन एम -45	2.5 ग्राम प्रति ली
		वेस्पा + कवच	01 मि. ली + 03 ग्रॅ प्रति ली
5	सर्कोस्पोरा पट्टी झुलसा (सर्कोस्पोरा लीफ ब्लाइट)	साफ	01 ग्रॅ प्रति लि.
6	प्याज का कण्ड (स्मट)	ब्लू कॉपर	2 ग्रॅ. प्रति लि.
7	काली फफूंदी (ब्लैक मोल्ड)	बाविस्टिन	2 ग्रॅ. प्रति लि.
8	झुलसा रोग (स्टेमफीलीयम ब्लाइट)	डायथेन एम -45	2.5 ग्राम प्रति ली
		ॲलिएट	02 ग्रॅ प्रति लि.
9	सफ़ेद गलन (व्हाईट रॉट)	नँटीव्हो	08 ग्रॅ प्रति 15 लि.
		रोको	01 ग्रॅ. प्रति लि.
10	आधारीय विगलन (बेसल रॉट)	डायथेन एम -45	02 ग्राम प्रति ली
11	मृदुरोमिल आसिता (डाऊनी मिल्ड्यू)	सेक्टीन	03 ग्राम प्रति ली
12	चुर्णीला आसिता (पाउडरी मिल्ड्रयु)	थायोनुट्री	02 ग्रॅ. प्रति लि.
13	ॲथ्रॅकनोस	मॅन्कोझेब.	2.5 ग्राम प्रति ली
		वेस्पा + कवच	01 मि. ली + 03 ग्राम प्रति ली

सिंचाई: मिट्टी की किसम और जलवायु के आधार पर सिंचाई की मात्रा और आवर्ती का फैसला करें| पहली सिंचाई बिजाई से तुरंत बाद करें और फिर आवश्यकता अनुसार
10-15 दिनों के फासले पर सिंचाई करें|

खरपतवार नियंत्रण: प्याज के पौधे की जड़े अपेक्षाकृत कम गहराई तक जाती है| इसलिए अधिक गहराई तक गुडाई नहीं करनी चाहिए| अच्छी फसल के लिए 3 से 4 बार खरपतवार निकलना आवश्यक होता है| खरपतवारनाशी का भी प्रयोग किया जा सकता है|

फसल की कटाई:सही समय पर पुटाई करना बहुत जरूरी है| जब 60-75% पौधे की पत्तियां नीचे की तरफ गिरना दर्शाता है कि फसल पुटाई के लिए तैयार है| फसल की पुटाई हाथों से प्याज़ को उखाड़ कर की जाती है| पुटाई के बाद इनको 2-3 दिन के लिए अनावश्यक नमी निकालने के लिए खेत में छोड़ दे|

टिपण्णी :- उपरोक्त सभी जाणकारीया हमारे अनुसंधान केंद्र पर किये गये प्रयोग पर आधारित है. भिन्न स्थानो पर भिन्न मौसम, भूमी प्रकार एवं ऋतू के कारण उपरोक्त जाणकारी मे बदलाव आ सकता है.

Higeo®

Markfield Agrotech
A-12, Addl. MIDC, Chh. Sambhaji Nagar Road, Jalna - 431 203 (MS) Mobile 9404470525

Onion

Varieties: -Basvant-780, Phule Samarth, Nasik Red, Light Red, Puna Phursungi, Arka Niketan, Super Puna Phursungi, Super Kesar Gold, Bhima Super, Bhima Kiran, S - 11,S - 21, S - 51,White Globe, Super King, Gulabi Phursungi,Maharaja Super, Super Red, Dhanwan, Dhanraj, Balwan, Bahubali, Bramha, Kartik Super, Maharudra Power Gold Plus, Early Gold, Early Plus Sarthak Gulabi Phursungi Gold Plus, Sarthak Gulabi Phursungi Super.

Climate for Onion; The onion crop requires a climate that is neither too hot nor too cold. Long days and somewhat high temperatures are good for the formation of good bulbs.

Suitable soil; Onion can be cultivated in all types of soil. For maximum yield of onion, sandy loam or loamy soil with proper drainage containing organic matter is most suitable.

Land Preparation: For good yield of onion, the field should be plowed four to five times. After every plowing, the soil should be made soft by using a plough. Planting should be done on a 1.2 meter wide strip at a height of 15 centimeters from the surface of the land. For this, the field can also be prepared with raised-bed system.

Time of sowing seeds in nursery
Sowing time - For Kharif onion, seeds are sown throughout the month of June and for Rabi onion, sowing is done from mid-October to November.

Quantity of seeds - 8 to 10 kg is required for planting per hectare.

Plant Preparation: Seeds are sown in raised beds. The width of the beds is kept 1 to 1.25 meters and the length as per convenience. However, 3 to 5 meter long beds are convenient. For planting one hectare, 70 beds (1.0 X 5.0 meter size) are sufficient.

Planting distance - While planting, distance between rows is kept 22.5 cm and distance between plants within a row is 10 cm.

Manure and Fertilizer: - Using Fertera (Dupond) 4 kg per acre or Vertico (Syngenta) 2.5 kg per acre along with manure provides protection from sap sucking insects for 21 days.

Sr No	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	At the time of transplantation	50	50	100
2	25-30 days after transplantation	25	00	00
3	25-30 days after second dose	25	00	00
	Total	100	50	100

Disease and pest control: - Fertera (Dupond) 4 kg per acre or Vertico (Syngenta) 2.5 kg per acre with fertilizer. Using this ratio gives protection from sucking insects for 21 days.

Sr .no	Disease/pest	Control	Quantity per liter of water
1	Thrips	Decis	01 ml/liter
		Delegate	01 ml/liter
2	Leaf Minor	Karate	01 ml/liter
		Tracer	0.5 ml/liter
3	Damping Off	Aliate	02 g/liter
		Redomil Gold	02 g/liter
4	Purple Blotch	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter
5	Cercospora Leaf Blight	SAAF	01 g/liter.
6	Smut	Blue Copper	02 g/liter
7	Black Mould	Bavistin	02 g/liter
8	Stemiphylium Blight	Dithane M-45	2.5 G/Liter
		Aliette	02 g/liter
9	White Rot	Natio	08 g/15lite
		Roko	01 g/liter.
10	Basal Rot	Dithane M-45	02 g/liter
11	Downey Mildew	Sectin	03 ग्रॉg/liter
12	Powdery Mildew	Thionutri	02 g/liter
13	Anthracnose	Mancozeb.	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter

Irrigation: Decide the quantity and frequency of irrigation based on soil type and climate. First irrigation should be done immediately after sowing and then irrigation should be done at an interval of 10-15 days as per requirement.

Weed control: The roots of onion plant go to relatively less depth. Therefore, weeding should not be done to a greater depth. For a good crop, it is necessary to remove weeds 3 to 4 times. Herbicides can also be used.

Crop harvesting: It is very important to do weeding at the right time. When 60-75% of the leaves of the plant fall down, it indicates that the crop is ready for harvesting. The crop is harvested by uprooting the onions by hand. After harvesting, leave them in the field for 2-3 days to remove unnecessary moisture.

Note: - All the above information is based on the experiment conducted at our research center. The above information may change due to different weather, soil type and season at different places.

Higeo®

માર્કફીલ્ડ એગ્રોટેક
એ-૧૨, એડિશનલ. એમઆઇડીસી, છ. સંભાજી નગર રોડ, જાલના - 431 203 (MS) મોબાઇલ 9404470525

ડુંગળી

જાતો: -બસવંત-780, ફુલે સમર્થ, નાસિક રેડ, લાઇટ રેડ, પુના ફુરસુંગી, અર્કા નિકેતન, સુપર પુના ફુરસુંગી, સુપર કેસર ગોલ્ડ, ભીમા સુપર, ભીમા કિરણ, એસ - 11, એસ - 21, એસ - 51, વ્હાઇટ ગ્લોબ, સુપરમા ફુરસુંગી, સુપરમા કિંગ્સ, સુપર રેડ, ધનવાન, ધનરાજ, બલવાન, બાહુબલી, બ્રમ્હા, કાર્તિક સુપર, મહારુદ્ર પાવર ગોલ્ડ પ્લસ, અર્લી ગોલ્ડ, અર્લી પ્લસ સાર્થક ગુલાબી ફુરસુંગી ગોલ્ડ પ્લસ, સાર્થક ગુલાબી ફુરસુંગી સુપર.

ડુંગળી માટે આબોહવા
ડુંગળીના પાકને એવી આબોહવાની જરૂર પડે છે જે ન તો ખૂબ ગરમ હોય કે ન તો ખૂબ ઠંડુ. લાંબા દિવસો અને કંઈક અંશે ઊંચું તાપમાન સારા બલ્બ બનાવવા માટે સારું છે.

યોગ્ય જમીન
ડુંગળીની ખેતી તમામ પ્રકારની જમીનમાં કરી શકાય છે. ડુંગળીના મહત્તમ ઉત્પાદન માટે, કાર્બનિક પદાર્થો ધરાવતા યોગ્ય ડ્રેનેજવાળી રેતાળ લોમ અથવા લોમી જમીન સૌથી યોગ્ય છે.

જમીનની તૈયારી

ડુંગળીના સારા ઉત્પાદન માટે, ખેતરને ચારથી પાંચ વખત ખેડવું જોઈએ. દરેક ખેડાણ પછી, હળનો ઉપયોગ કરીને માટીને નરમ બનાવવી જોઈએ. જમીનની સપાટીથી ૧૫ સેન્ટિમીટરની ઊંચાઈએ ૧.૨ મીટર પહોળા પટ્ટા પર વાવેતર કરવું જોઈએ. આ માટે, ખેતરને ઉંચા પટ્ટાવાળી પદ્ધતિથી પણ તૈયાર કરી શકાય છે.

નર્સરીમાં બીજ વાવવાનો સમય

વાવણીનો સમય - ખરીફ ડુંગળી માટે, બીજ જૂન મહિના દરમિયાન વાવવામાં આવે છે અને રવિ ડુંગળી માટે, વાવણી મધ્ય ઓક્ટોબરથી નવેમ્બર સુધી કરવામાં આવે છે.

બીજનો જથ્થો - પ્રતિ હેક્ટર વાવેતર માટે ૮ થી ૧૦ કિલો જરૂરી છે.

છોડની તૈયારી

ઉચ્ચા પટ્ટામાં બીજ વાવવામાં આવે છે. પટ્ટાની પહોળાઈ ૧ થી ૧.૨૫ મીટર અને લંબાઈ અનુકૂળતા મુજબ રાખવામાં આવે છે. જોકે, ૩ થી ૫ મીટર લાંબા પટ્ટા અનુકૂળ છે. એક હેક્ટર વાવેતર માટે, ૭૦ પથારી (૧.૦ X ૫.૦ મીટર કદ) પૂરતી છે.

વાવણીનું અંતર - વાવેતર કરતી વખતે, હરોળ વચ્ચેનું અંતર ૨૨.૫ સેમી અને હરોળમાં છોડ વચ્ચેનું અંતર ૧૦ સેમી રાખવામાં આવે છે.

ખાતર અને ખાતર: - ફર્ટેરા (ડુપોન્ડ) 4 કિલો પ્રતિ એકર અથવા વર્ટિકો (સિંજેન્ટા) 2.5 કિલો પ્રતિ એકર ખાતર સાથે વાપરવાથી 21 દિવસ સુધી રસ ચૂસનારા જંતુઓથી રક્ષણ મળે છે.

Sr No	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	At the time of transplantation	50	50	100
2	25-30 days after transplantation	25	00	00
3	25-30 days after second dose	25	00	00
	Total	100	50	100

રોગ અને જીવાત નિયંત્રણ રાસાયણિક દવાનો ડોઝ અને સમય:- ફર્ટેરા (ડુપોન્ડ) 4 કિલો પ્રતિ એકર અથવા વર્ટિકો (સિંજેન્ટા) 2.5 કિલો પ્રતિ એકર ખાતર સાથે. આ ગુણોત્તરનો ઉપયોગ કરવાથી 21 દિવસ સુધી રસ ચૂસનારા જંતુઓથી રક્ષણ મળે છે.

Sr .no	Disease/pest	Control	Quantity per liter of water
1	Thrips	Decis	01 ml/liter
		Delegate	01 ml/liter
2	Leaf Minor	Karate	01 ml/liter
		Tracer	0.5 ml/liter
3	Damping Off	Aliate	02 g/liter
		Redomil Gold	02 g/liter
4	Purple Blotch	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter
5	Cercospora Leaf Blight	SAAF	01 g/liter.
6	Smut	Blue Copper	02 g/liter
7	Black Mould	Bavistin	02 g/liter
8	Stemiphylium Blight	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Aliette	02 g/liter
9	White Rot	Natio	08 g/15lite
		Roko	01 g/liter.
10	Basal Rot	Dithane M-45	02 g/liter
11	Downey Mildew	Sectin	03 ग्रॉg/liter
12	Powdery Mildew	Thionutri	02 g/liter
13	Anthracnose	Mancozeb.	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter

સિંચાઈ: જમીનના પ્રકાર અને આબોહવા પર આધારિત સિંચાઈની માત્રા અને આવર્તન નક્કી કરો. વાવણી પછી તરત જ પ્રથમ સિંચાઇ કરવી જોઈએ અને પછી જરૂરિયાત મુજબ 10-15 દિવસના અંતરે સિંચાઇ કરવી જોઈએ.

નીંદણ નિયંત્રણ: ડુંગળીના છોડના મૂળ પ્રમાણમાં ઓછી ઊંડાઈ સુધી જાય છે. તેથી, વધુ ઊંડાઈ સુધી નીંદણ ન કરવું જોઈએ. સારા પાક માટે, 3 થી 4 વખત નીંદણ દૂર કરવું જરૂરી છે. વનસ્પતિનાશકોનો પણ ઉપયોગ કરી શકાય છે.

પાકની કાપણી: યોગ્ય સમયે નીંદણ કરવું ખૂબ જ મહત્વપૂર્ણ છે. જ્યારે છોડના 60-75% પાંદડા નીચે પડી જાય છે, ત્યારે તે સૂચવે છે કે પાક લણણી માટે તૈયાર છે. ડુંગળીને હાથથી ઉખેડીને પાકની કાપણી કરવામાં આવે છે. લણણી પછી, બિનજરૂરી ભેજ દૂર કરવા માટે તેને 2-3 દિવસ માટે ખેતરમાં છોડી દો.

નોંધ: - ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં કરવામાં આવેલા પ્રયોગ પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી વિવિધ સ્થળોએ વિવિધ હવામાન, માટીના પ્રકાર અને ઋતુને કારણે બદલાઈ શકે છે.

మార్క్‌ఫీల్డ్ ఆగ్రోటెక్
A-12, అదనపు. MIDC, చ. సంభాజీ నగర్ రోడ్, జల్నా - 431 203 (MS) మొబైల్ 9404470525

ఉల్లిపాయ

రకాలు: -బస్వంత్-780, ఫూలే సమర్థ్, నాసిక్ రెడ్, లేత ఎరుపు, పునా ఫుర్సుంగి, అర్కా నికేతన్, సూపర్ పునా ఫుర్సుంగి, సూపర్ కేసర్ గోల్డ్, భీమా సూపర్, భీమా కిరణ్, S - 11,S - 21, S - 51,వైట్, గ్లోబ్, సూపర్‌జా గ్లోబ్, సూపర్‌జా, సూపర్‌జా, సూపర్ రెడ్, ధన్వన్, ధనరాజ్, బల్వాన్, బాహుబలి, బ్రహ్మ, కార్తిక్ సూపర్, మహారుద్ర పవర్ గోల్డ్ ప్లస్, ఎర్లీ గోల్డ్, ఎర్లీ ప్లస్ సార్థక్ గులాబి ఫుర్సుంగి గోల్డ్ ప్లస్, సార్థక్ గులాబి ఫుర్సుంగి సూపర్.

ఉల్లిపాయ పంటకు చాలా వేడిగా లేదా చాలా చల్లగా లేని వాతావరణం అవసరం. మంచి గడ్డలు ఏర్పడటానికి ఎక్కువ రోజులు మరియు కొంత ఎక్కువ ఉష్ణోగ్రతలు మంచివి.

తగిన నేల: ఉల్లిపాయను అన్ని రకాల నేలల్లో పండించవచ్చు. ఉల్లిపాయ గరిష్ట దిగుబడి కోసం, సేంద్రీయ పదార్థం కలిగిన సరైన డ్రైనేజీ ఉన్న ఇసుక లోమ్ లేదా లోమీ నేల చాలా అనుకూలంగా ఉంటుంది.

భూమి తయారీ
ఉల్లిపాయ మంచి దిగుబడి కోసం, పొలాన్ని నాలుగు నుండి ఐదు సార్లు దున్నాలి. ప్రతి దున్నిన తర్వాత, నాగలిని ఉపయోగించి నేలను మృదువుగా చేయాలి. భూమి ఉపరితలం నుండి 15 సెంటీమీటర్ల ఎత్తులో 1.2 మీటర్ల వెడల్పు గల స్ట్రిప్‌పై నాటాలి. దీని కోసం, పొలాన్ని ఎత్తైన బెడ్ వ్యవస్థతో కూడా సిద్ధం చేయవచ్చు.

నర్సరీలో విత్తనాలు విత్తే సమయం
విత్తే సమయం - ఖరీఫ్ ఉల్లిపాయలకు, జూన్ నెల అంతా విత్తనాలు విత్తుతారు మరియు రబీ ఉల్లిపాయలకు, అక్టోబర్ మధ్య నుండి నవంబర్ వరకు విత్తుతారు.

విత్తనాల పరిమాణం - హెక్టారుకు నాటడానికి 8 నుండి 10 కిలోలు అవసరం.

మొక్కల తయారీ

విత్తనాలను ఎత్తైన బెడ్‌లలో విత్తుతారు. బెడ్‌ల వెడల్పు 1 నుండి 1.25 మీటర్లు మరియు సౌలభ్యం ప్రకారం పొడవు ఉంచబడుతుంది. అయితే, 3 నుండి 5 మీటర్ల పొడవు బెడ్‌లు సౌకర్యవంతంగా ఉంటాయి. ఒక హెక్టార్ నాటడానికి, 70 బెడ్‌లు (1.0 X 5.0 మీటర్ల పరిమాణం) సరిపోతాయి.

నాటడం దూరం - నాటేటప్పుడు, వరుసల మధ్య దూరం 22.5 సెం.మీ మరియు వరుసలోని మొక్కల మధ్య దూరం 10 సెం.మీ. ఉంచబడుతుంది.

ఎరువు మరియు ఎరువులు: - ఎకరానికి ఫెర్టెరా (డూపాండ్) 4 కిలోలు లేదా ఎకరానికి వెర్టికో (సింజెంటా) 2.5 కిలోలు ఎరువుతో కలిపి వాడటం వలన 21 రోజుల పాటు రసం పీల్చే కీటకాల నుండి రక్షణ లభిస్తుంది.

Sr No	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	At the time of transplantation	50	50	100
2	25-30 days after transplantation	25	00	00
3	25-30 days after second dose	25	00	00
	Total	100	50	100

వ్యాధి మరియు తెగులు నియంత్రణ రసాయన ఔషధం యొక్క మోతాదు మరియు సమయం:- ఎకరానికి ఎకరానికి 4 కిలోలు లేదా ఎకరానికి వెర్టికో (సింజెంటా) 2.5 కిలోలు ఎరువులతో వాడటం వలన 21 రోజుల పాటు రసం పీల్చే కీటకాల నుండి రక్షణ లభిస్తుంది.

Sr .no	Disease/pest	Control	Quantity per liter of water
1	Thrips	Decis	01 ml/liter
		Delegate	01 ml/liter
2	Leaf Minor	Karate	01 ml/liter
		Tracer	0.5 ml/liter
3	Damping Off	Aliate	02 g/liter
		Redomil Gold	02 g/liter
4	Purple Blotch	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter
5	Cercospora Leaf Blight	SAAF	01 g/liter.
6	Smut	Blue Copper	02 g/liter
7	Black Mould	Bavistin	02 g/liter
8	Stemiphylium Blight	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Aliette	02 g/liter
9	White Rot	Natio	08 g/15lite
		Roko	01 g/liter.
10	Basal Rot	Dithane M-45	02 g/liter
11	Downey Mildew	Sectin	03 ग्राg/liter
12	Powdery Mildew	Thionutri	02 g/liter
13	Anthracnose	Mancozeb.	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter

నీటిపారుదల: నేల రకం మరియు వాతావరణం ఆధారంగా నీటిపారుదల పరిమాణం మరియు ఫ్రీక్వెన్సీని నిర్ణయించండి. మొదట విత్తిన వెంటనే నీరు పెట్టాలి, తరువాత అవసరాన్ని బట్టి 10-15 రోజుల వ్యవధిలో నీరు పెట్టాలి.

కలుపు నియంత్రణ: ఉల్లిపాయ మొక్క యొక్క వేర్లు సాపేక్షంగా తక్కువ లోతుకు వెళ్తాయి. అందువల్ల, ఎక్కువ లోతుకు కలుపు తీయకూడదు. మంచి పంట కోసం, కలుపు మొక్కలను 3 నుండి 4 సార్లు తొలగించడం అవసరం. కలుపు మందులను కూడా ఉపయోగించవచ్చు.

పంట కోత: సరైన సమయంలో కలుపు తీయడం చాలా ముఖ్యం. మొక్క యొక్క 60-75% ఆకులు పడిపోయినప్పుడు, పంట కోతకు సిద్ధంగా ఉందని సూచిస్తుంది. ఉల్లిపాయలను చేతితో పెకిలించడం ద్వారా పంటను పండిస్తారు. కోత తర్వాత, అనవసరమైన తేమను తొలగించడానికి వాటిని 2-3 రోజులు పొలంలో ఉంచండి.

గమనిక: - పైన పేర్కొన్న సమాచారం అంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగం ఆధారంగా ఉంటుంది. వివిధ ప్రదేశాలలో వాతావరణం, నేల రకం మరియు సీజన్ కారణంగా పై సమాచారం మారవచ్చు.

Higeo®

B ಮಾರ್ಕ್‌ಫೀಲ್ಡ್ ಅಗ್ರೋಟೆಕ್
ಎ-12, ಹೆಚ್ಚುವರಿ. ಎಂಐಡಿಸಿ, ಚ. ಸಂಭಾಜಿ ನಗರ ರಸ್ತೆ, ಜಲ್ನಾ - 431 203 (MS) ಮೊಬೈಲ್ 9404470525

ಈರುಳ್ಳಿ

ಪ್ರಭೇದಗಳು: -ಬಸವಂತ್-780, ಫುಲೆ ಸಮರ್ಥ್, ನಾಸಿಕ್ ರೆಡ್, ಲೈಟ್ ರೆಡ್, ಪುನ ಫುಸ್ರ್ಯಂಗಿ, ಅರ್ಕಾ ನಿಕೇತನ್, ಸೂಪರ್ ಪುನ ಫುಸ್ರ್ಯಂಗಿ, ಸೂಪರ್ ಕೇಸರ್ ಗೋಲ್ಡ್, ಭೀಮಾ ಸೂಪರ್, ಭೀಮ ಕಿರಣ್, ಎಸ್ - 11,ಎಸ್ - 21, ಎಸ್ - 51, ವೈಟ್ ಗ್ಲೋಬ್, ಸೂಪರ್ ಕಿಂಗ್, ಗ್ಲೋಬ್, ಸೂಪರ್‌ಸ್ಯಾ ಸೂಪರ್ ರೆಡ್, ಧನ್ವಾನ್, ಧನರಾಜ್, ಬಲ್ವಾನ್, ಬಾಹುಬಲಿ, ಬ್ರಹ್ಮ, ಕಾರ್ತಿಕ್ ಸೂಪರ್, ಮಹಾರುದ್ರ ಪವರ್ ಗೋಲ್ಡ್ ಪ್ಲಸ್, ಅರ್ಲಿ ಗೋಲ್ಡ್, ಅರ್ಲಿ ಪ್ಲಸ್, ಸಾರ್ಥಕ್ ಗುಲಾಬಿ ಫಸ್ರ್ಯಂಗಿ ಗೋಲ್ಡ್ ಪ್ಲಸ್, ಸಾರ್ಥಕ್ ಗುಲಾಬಿ ಫುಸ್ರ್ಯಂಗಿ ಸೂಪರ್.

ಈರುಳ್ಳಿಗೆ ಹವಾಮಾನ
ಈರುಳ್ಳಿ ಬೆಳೆಗೆ ಹೆಚ್ಚು ಬಿಸಿಯಾಗಿಲ್ಲದ ಅಥವಾ ಹೆಚ್ಚು ತಂಪಾಗಿರದ ಹವಾಮಾನದ ಅಗತ್ಯವಿದೆ. ಉತ್ತಮ ಬಲ್ಬ್‌ಗಳ ರಚನೆಗೆ ದೀರ್ಘ ದಿನಗಳು ಮತ್ತು ಸ್ವಲ್ಪ ಹೆಚ್ಚಿನ ತಾಪಮಾನ ಒಳ್ಳೆಯದು.

ಸೂಕ್ತವಾದ ಮಣ್ಣು
ಎಲ್ಲಾ ರೀತಿಯ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಈರುಳ್ಳಿಯನ್ನು ಬೆಳೆಸಬಹುದು. ಈರುಳ್ಳಿಯ ಗರಿಷ್ಠ ಇಳುವರಿಗಾಗಿ, ಸಾವಯವ ಪದಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಸರಿಯಾದ ಒಳಚರಂಡಿ ಹೊಂದಿರುವ ಮರಳು ಮಿಶ್ರಿತ ಲೋಮಿ ಅಥವಾ ಲೋಮಿ ಮಣ್ಣು ಹೆಚ್ಚು ಸೂಕ್ತವಾಗಿದೆ.

ಭೂಮಿ ತಯಾರಿ

ಈರುಳ್ಳಿಯ ಉತ್ತಮ ಇಳುವರಿಗಾಗಿ, ಹೊಲವನ್ನು ನಾಲ್ಕರಿಂದ ಐದು ಬಾರಿ ಉಳುಮೆ ಮಾಡಬೇಕು. ಪ್ರತಿ ಉಳುಮೆಯ ನಂತರ, ನೇಗಿಲನ್ನು ಬಳಸಿಕೊಂಡು ಮಣ್ಣನ್ನು ಮೃದುಗೊಳಿಸಬೇಕು. ಭೂಮಿಯ ಮೇಲ್ಮೈಯಿಂದ 15 ಸೆಂಟಿಮೀಟರ್ ಎತ್ತರದಲ್ಲಿ 1.2 ಮೀಟರ್ ಅಗಲದ ಪಟ್ಟಿಯ ಮೇಲೆ ನಾಟಿ ಮಾಡಬೇಕು. ಇದಕ್ಕಾಗಿ, ಹೊಲವನ್ನು ಎತ್ತರಿಸಿದ ಹಾಸಿಗೆ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯೊಂದಿಗೆ ಸಹ ತಯಾರಿಸಬಹುದು.

ನರ್ಸರಿಯಲ್ಲಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತುವ ಸಮಯ

ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ - ಖಾರಿಫ್ ಈರುಳ್ಳಿಗೆ, ಜೂನ್ ತಿಂಗಳಾದ್ಯಂತ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತಲಾಗುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ರಬಿ ಈರುಳ್ಳಿಗೆ, ಅಕ್ಟೋಬರ್ ಮಧ್ಯದಿಂದ ನವೆಂಬರ್ ವರೆಗೆ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಬೀಜಗಳ ಪ್ರಮಾಣ - ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ ನಾಟಿ ಮಾಡಲು 8 ರಿಂದ 10 ಕೆಜಿ ಅಗತ್ಯವಿದೆ.

ಸಸ್ಯ ತಯಾರಿ

ಬೀಜಗಳನ್ನು ಎತ್ತರಿಸಿದ ಹಾಸಿಗೆಗಳಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಲಾಗುತ್ತದೆ. ಹಾಸಿಗೆಗಳ ಅಗಲವನ್ನು 1 ರಿಂದ 1.25 ಮೀಟರ್ ಮತ್ತು ಅನುಕೂಲಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಉದ್ದವನ್ನು ಇಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಆದಾಗ್ಯೂ, 3 ರಿಂದ 5 ಮೀಟರ್ ಉದ್ದದ ಹಾಸಿಗೆಗಳು ಅನುಕೂಲಕರವಾಗಿವೆ. ಒಂದು ಹೆಕ್ಟೇರ್ ನೆಡಲು, 70 ಹಾಸಿಗೆಗಳು (1.0 X 5.0 ಮೀಟರ್ ಗಾತ್ರ) ಸಾಕು.

ನೆಟ್ಟ ಅಂತರ - ನಾಟಿ ಮಾಡುವಾಗ, ಸಾಲುಗಳ ನಡುವಿನ ಅಂತರ 22.5 ಸೆಂ.ಮೀ ಮತ್ತು ಸಾಲಿನೊಳಗಿನ ಸಸ್ಯಗಳ ನಡುವಿನ ಅಂತರ 10 ಸೆಂ.ಮೀ. ಗೊಬ್ಬರ ಮತ್ತು ಗೊಬ್ಬರ: - ಎಕರೆಗೆ ಫರ್ಟೆರಾ (ಡುಪಾಂಡ್) 4 ಕೆಜಿ ಅಥವಾ ಗೊಬ್ಬರದೊಂದಿಗೆ ಎಕರೆಗೆ 2.5 ಕೆಜಿ ವರ್ಟಿಕೊ (ಸಿಂಜೆಂಟಾ) ಬಳಸುವುದರಿಂದ 21 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ರಸ ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಣೆ ದೊರೆಯುತ್ತದೆ.

Sr No	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	At the time of transplantation	50	50	100
2	25-30 days after transplantation	25	00	00
3	25-30 days after second dose	25	00	00
	Total	100	50	100

ರೋಗ ಮತ್ತು ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣ ರಾಸಾಯನಿಕ ಔಷಧದ ಡೋಸೇಜ್ ಮತ್ತು ಸಮಯ:- ಎಕರೆಗೆ ಫರ್ಟೆರಾ (ಡುಪಾಂಡ್) 4 ಕೆಜಿ ಅಥವಾ ವರ್ಟಿಕೊ (ಸಿಂಜೆಂಟಾ) 2.5 ಕೆಜಿ ಗೊಬ್ಬರದೊಂದಿಗೆ ಎಕರೆಗೆ. ಈ ಅನುಪಾತವನ್ನು ಬಳಸುವುದರಿಂದ 21 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಣೆ ಸಿಗುತ್ತದೆ.

Sr .no	Disease/pest	Control	Quantity per liter of water
1	Thrips	Decis	01 ml/liter
		Delegate	01 ml/liter
2	Leaf Minor	Karate	01 ml/liter
		Tracer	0.5 ml/liter
3	Damping Off	Aliate	02 g/liter
		Redomil Gold	02 g/liter
4	Purple Blotch	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter
5	Cercospora Leaf Blight	SAAF	01 g/liter.
6	Smut	Blue Copper	02 g/liter
7	Black Mould	Bavistin	02 g/liter
8	Stemiphylium Blight	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Aliette	02 g/liter
9	White Rot	Natio	08 g/15lite
		Roko	01 g/liter.
10	Basal Rot	Dithane M-45	02 g/liter
11	Downey Mildew	Sectin	03 gm/liter
12	Powdery Mildew	Thionutri	02 g/liter
13	Anthracnose	Mancozeb.	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter

ನೀರಾವರಿ: ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ಹವಾಮಾನದ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ನೀರಾವರಿಯ ಪ್ರಮಾಣ ಮತ್ತು ಆವರ್ತನವನ್ನು ನಿರ್ಧರಿಸಿ. ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ ತಕ್ಷಣ ಮೊದಲು ನೀರುಹಾಕಬೇಕು ಮತ್ತು ನಂತರ ಅವಶ್ಯಕತೆಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ 10-15 ದಿನಗಳ ಮಧ್ಯಂತರದಲ್ಲಿ ನೀರುಹಾಕಬೇಕು.

ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ: ಈರುಳ್ಳಿ ಗಿಡದ ಬೇರುಗಳು ತುಲನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಕಡಿಮೆ ಆಳಕ್ಕೆ ಹೋಗುತ್ತವೆ. ಆದ್ದರಿಂದ, ಹೆಚ್ಚಿನ ಆಳಕ್ಕೆ ಕಳೆ ತೆಗೆಯಬಾರದು. ಉತ್ತಮ ಬೆಳೆಗಾಗಿ, ಕಳೆಗಳನ್ನು 3 ರಿಂದ 4 ಬಾರಿ ತೆಗೆದುಹಾಕುವುದು ಅವಶ್ಯಕ. ಕಳೆನಾಶಕಗಳನ್ನು ಸಹ ಬಳಸಬಹುದು.

ಬೆಳೆ ಕೊಯ್ಲು: ಸರಿಯಾದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಕಳೆ ತೆಗೆಯುವುದು ಬಹಳ ಮುಖ್ಯ. ಸಸ್ಯದ 60-75% ಎಲೆಗಳು ಬಿದ್ದಾಗ, ಬೆಳೆ ಕೊಯ್ಲಿಗೆ ಸಿದ್ಧವಾಗಿದೆ ಎಂದು ಸೂಚಿಸುತ್ತದೆ. ಈರುಳ್ಳಿಯನ್ನು ಕೈಯಿಂದ ಕಿತ್ತುಹಾಕುವ ಮೂಲಕ ಬೆಳೆಯನ್ನು ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಿದ ನಂತರ, ಅನಗತ್ಯ ತೇವಾಂಶವನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕಲು ಅವುಗಳನ್ನು 2-3 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಹೊಲದಲ್ಲಿ ಬಿಡಿ.

ಗಮನಿಸಿ: - ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿಭಿನ್ನ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ವಿಭಿನ್ನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ಋತುವಿನ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.

Higeo®
মাৰ্কফিল্ড এগ্ৰ'টেক
এ-১২, এডল. এম আই ডি চি, ছ. সম্ভাজী নগৰ ৰোড, জালনা - ৪৩১ ২০৩ (এম এছ) মোবাইল ৯৪০৪৪৭০৫২৫

পিঁয়াজ

জাত: -বাছুরন্ত-৭৮০, ফুলে সমাৰ্থ, নাচিক ৰঙা, পাতল ৰঙা, পুনা ফুৰছুংগী, আৰ্কা নিকেতন, চুপাৰ পুনা ফুৰছুংগী, চুপাৰ কেছাৰ গোল্ড, ভীমা চুপাৰ, ভীমা কিৰণ, এছ - ১১,এছ - ২১, এছ - ৫১,হোৱাইট গ্ল'ব, ছুপাৰ কিং, গুলাবি ফুৰছুংগী,মহাৰাজা ছুপাৰ, চুপাৰ ৰেড, ধনৱান, ধনৰাজ, বলৱান, বাহুবলী, ব্ৰমৃহা, কাৰ্তিক ছুপাৰ, মহাৰুদ্ৰ পাৱাৰ গোল্ড প্লাছ, আৰলি গোল্ড, আৰলি প্লাছ সৰ্থক গুলাবি ফুৰছুংগী গোল্ড প্লাছ, সৰ্থক গুলাবি ফুৰছুংগী ছুপাৰ।

পিঁয়াজৰ বাবে জলবায়ু: পিঁয়াজৰ শস্যৰ বাবে এনেকুৱা জলবায়ুৰ প্ৰয়োজন হয় যিটো বেছি গৰম নহয়, বেছি ঠাণ্ডাও নহয়। দীঘলীয়া দিন আৰু কিছু উচ্চ উষ্ণতা ভাল বাল্ব গঠনৰ বাবে ভাল।

উপযুক্ত মাটি;সকলো ধৰণৰ মাটিত পিয়াঁজৰ খেতি কৰিব পাৰি। পিয়াঁজৰ সৰ্বাধিক উৎপাদনৰ বাবে জৈৱিক পদাৰ্থ থকা সঠিক পানী নিষ্কাশন থকা বালিচহীয়া লোম বা লোমী মাটি অতি উপযোগী।

ভূমি প্ৰস্তুতি:
পিয়াঁজৰ ভাল উৎপাদন হ'লে পথাৰখন চাৰি-পাঁচবাৰ হাল বাই খাব লাগে। প্ৰতিটো হাল বোৱাৰ পাছত নাঙল ব্যৱহাৰ কৰি মাটি কোমল কৰিব লাগে। মাটিৰ পৃষ্ঠৰ পৰা ১৫ চেণ্টিমিটাৰ উচ্চতাত ১.২ মিটাৰ বহল ফিটাত ৰোপণ কৰিব লাগে। ইয়াৰ বাবে উত্থাপিত বিচনা ব্যৱস্থাৰেও পথাৰখন প্ৰস্তুত কৰিব পাৰি।

নাৰ্চাৰীত বীজ সিঁচাৰ সময়
বীজ সিঁচাৰ সময় - খাৰিফ পিঁয়াজৰ বাবে গোটেই জুন মাহটো বীজ সিঁচা হয় আৰু ৰবি পিঁয়াজৰ বাবে অক্টোবৰৰ মাজভাগৰ পৰা নৱেম্বৰ মাহলৈকে বীজ সিঁচা হয়।

বীজৰ পৰিমাণ - প্ৰতি হেক্টৰত ৰোপণৰ বাবে ৮ৰ পৰা ১০ কেজিৰ প্ৰয়োজন হয়।

উদ্ভিদ প্ৰস্তুতি:
উঠা বিচনাত বীজ সিঁচা হয়। বিচনাৰ প্ৰস্থ ১ৰ পৰা ১.২৫ মিটাৰ আৰু সুবিধা অনুসৰি দৈৰ্ঘ্য ৰখা হয়। অৱশ্যে ৩ৰ পৰা ৫ মিটাৰ দীঘল বিচনা সুবিধাজনক। এক হেক্টৰ ৰোপণৰ বাবে ৭০খন বিচনা (১.০ X ৫.০ মিটাৰ আকাৰ) যথেষ্ট।

ৰোপণৰ দূৰত্ব - ৰোপণৰ সময়ত শাৰীৰ মাজৰ দূৰত্ব ২২.৫ চে.মি. আৰু শাৰীৰ ভিতৰত গছৰ মাজৰ দূৰত্ব ১০ চে.মি.

গোবৰ আৰু সাৰ: - ফেৰটেৰা (Dupond) প্ৰতি একৰত ৪ কেজি বা Vertico (Syngenta) ২.৫ কিলোগ্ৰাম প্ৰতি একৰত গোবৰৰ সৈতে ব্যৱহাৰ কৰিলে ২১ দিনলৈ ৰস চুহি খোৱা পোক-পৰুৱাৰ পৰা সুৰক্ষা পোৱা যায়।

Sr No	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	At the time of transplantation	50	50	100
2	25-30 days after transplantation	25	00	00
3	25-30 days after second dose	25	00	00
	Total	100	50	100

ৰোগ আৰু কীট-পতংগ নিয়ন্ত্ৰণ ৰাসায়নিক ঔষধৰ মাত্ৰা আৰু সময়:- ফেৰটেৰা (Dupond) প্ৰতি একৰত ৪ কেজি বা ভাৰ্টিকো (Syngenta) সাৰসহ প্ৰতি একৰত ২.৫ কিলোগ্ৰাম। এই অনুপাত ব্যৱহাৰ কৰিলে ২১ দিনলৈকে পোক-পৰুৱা চুহি খোৱাৰ পৰা সুৰক্ষা পোৱা যায়।

Sr .no	Disease/pest	Control	Quantity per liter of water
1	Thrips	Decis	01 ml/liter
		Delegate	01 ml/liter
2	Leaf Minor	Karate	01 ml/liter
		Tracer	0.5 ml/liter
3	Damping Off	Aliate	02 g/liter
		Redomil Gold	02 g/liter
4	Purple Blotch	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter
5	Cercospora Leaf Blight	SAAF	01 g/liter.
6	Smut	Blue Copper	02 g/liter
7	Black Mould	Bavistin	02 g/liter
8	Stemiphylium Blight	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Aliette	02 g/liter
9	White Rot	Natio	08 g/15lite
		Roko	01 g/liter.
10	Basal Rot	Dithane M-45	02 g/liter
11	Downey Mildew	Sectin	03 ग्राg/liter
12	Powdery Mildew	Thionutri	02 g/liter
13	Anthracnose	Mancozeb.	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter

জলসিঞ্চন: মাটিৰ প্ৰকাৰ আৰু জলবায়ুৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি জলসিঞ্চনৰ পৰিমাণ আৰু কম্পাঙ্ক নিৰ্ণয় কৰা। প্ৰথমে বীজ সিঁচাৰ লগে লগে জলসিঞ্চন কৰিব লাগে আৰু তাৰ পিছত প্ৰয়োজন অনুসৰি ১০-১৫ দিনৰ ব্যৱধানত জলসিঞ্চন কৰিব লাগে।

অপতৃণ নিয়ন্ত্ৰণ: পিঁয়াজ গছৰ শিপা তুলনামূলকভাৱে কম গভীৰতালৈ যায়। গতিকে অধিক গভীৰতালৈ অপতৃণ কাটিব নালাগে। ভাল শস্যৰ বাবে ৩ৰ পৰা ৪ বাৰ অপতৃণ আঁতৰোৱাটো প্ৰয়োজনীয়। ঘাঁহনিনাশক ঔষধো ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰি।

শস্য চপোৱা: সঠিক সময়ত অপতৃণ কাটি লোৱাটো অতি প্ৰয়োজনীয়। যেতিয়া গছজোপাৰ ৬০-৭৫% পাত তললৈ সৰি পৰে তেতিয়া ইয়াৰ দ্বাৰা শস্য চপোৱাৰ বাবে সাজু হোৱাৰ ইংগিত পোৱা যায়। হাতেৰে পিঁয়াজ উভালি খেতি চপোৱা হয়। চপোৱাৰ পিছত ২-৩ দিন পথাৰত থৈ দিব লাগে যাতে অপ্ৰয়োজনীয় আৰ্দ্ৰতা আঁতৰ হয়।

বি:দ্ৰ: - ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্ৰত কৰা পৰীক্ষাৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি দিয়া হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন বতৰ, মাটিৰ প্ৰকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে উপৰোক্ত তথ্য সলনি হ'ব পাৰে।

Higeo®
মার্কফিল্ড অ্যাগ্রোটেক
এ-১২, অতিরিক্ত। এমআইডিসি, ছ। সম্ভাজি নগর রোড, জালনা - 431 203 (MS) মোবাইল 9404470525

পেঁয়াজ

জাত: -বাসবন্ত-780, ফুলে সমর্থ, নাসিক রেড, লাইট রেড, পুনা ফুরসুঙ্গি, অর্ক নিকেতন, সুপার পুনা ফুরসুঙ্গি, সুপার কেসর গোল্ড, ভীমা সুপার, ভীমা কিরণ, এস - 11, এস - 21, এস - 51, হোয়াইট গ্লোব, সুপারমা কিংস, সুপারমহারা, গুলা। সুপার রেড, ধনওয়ান, ধনরাজ, বলওয়ান, বাহুবলী, ব্রহ্মা, কার্তিক সুপার, মহারুদ্র পাওয়ার গোল্ড প্লাস, আর্লি গোল্ড, আর্লি প্লাস, সার্থক পিঙ্ক ফুরসুঙ্গি গোল্ড প্লাস, সার্থক পিঙ্ক ফুরসুঙ্গি সুপার.বেন

পেঁয়াজের জন্য জলবায়ু:পেঁয়াজ ফসলের জন্য এমন জলবায়ু প্রয়োজন যা খুব বেশি গরম বা খুব ঠান্ডা নয়। দীর্ঘ দিন এবং কিছুটা উচ্চ তাপমাত্রা ভাল বাল্ব গঠনের জন্য ভাল।

উপযুক্ত মাটি:সব ধরণের মাটিতে পেঁয়াজ চাষ করা যেতে পারে। পেঁয়াজের সর্বাধিক ফলনের জন্য, জৈব পদার্থযুক্ত সঠিক নিষ্কাশন সহ বেলে দোআঁশ বা দোআঁশ মাটি সবচেয়ে উপযুক্ত।

ভূমি প্রস্তুতি;পেঁয়াজের ভাল ফলনের জন্য, ক্ষেত চার থেকে পাঁচ বার চাষ করতে হবে। প্রতিবার চাষের পর, লাঙ্গল ব্যবহার করে মাটি নরম করতে হবে। জমির পৃষ্ঠ থেকে ১৫ সেন্টিমিটার উচ্চতায় ১.২ মিটার চওড়া স্ট্রিপে রোপণ করতে হবে। এর জন্য, উত্থিত-বেড পদ্ধতিতেও ক্ষেত প্রস্তুত করা যেতে পারে।

নার্সারিতে বীজ বপনের সময়:বপনের সময় - খরিফ পেঁয়াজের জন্য, জুন মাস জুড়ে বীজ বপন করা হয় এবং রবি পেঁয়াজের জন্য, অক্টোবরের মাঝামাঝি থেকে নভেম্বর পর্যন্ত বপন করা হয়।

বীজের পরিমাণ - প্রতি হেক্টরে রোপণের জন্য ৮ থেকে ১০ কেজি প্রয়োজন।

গাছ তৈরি:
উঁচু বেডে বীজ বপন করা হয়। বেডের প্রস্থ ১ থেকে ১.২৫ মিটার এবং সুবিধা অনুযায়ী দৈর্ঘ্য রাখা হয়। তবে, ৩ থেকে ৫ মিটার লম্বা বেড সুবিধাজনক। এক হেক্টরে রোপণের জন্য, ৭০টি বেড (১.০ X ৫.০ মিটার আকার) যথেষ্ট।

রোপণের দূরত্ব - রোপণের সময়, সারির মধ্যে দূরত্ব ২২.৫ সেমি এবং সারির মধ্যে গাছের মধ্যে দূরত্ব ১০ সেমি রাখা হয়।

সার এবং সার: - প্রতি একরে ফেরটেরা (ডুপন্ড) ৪ কেজি অথবা প্রতি একরে ভার্টিকো (সিনজেন্টা) ২.৫ কেজি সারের সাথে ব্যবহার করলে ২১ দিন পর্যন্ত রস চুষে নেওয়া পোকামাকড় থেকে সুরক্ষা পাওয়া যায়।

Sr No	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	At the time of transplantation	50	50	100
2	25-30 days after transplantation	25	00	00
3	25-30 days after second dose	25	00	00
	Total	100	50	100

**রোগ এবং পোকামাকড় নিয়ন্ত্রণ রাসায়নিক ঔষধের মাত্রা এবং সময়:- প্রতি একরে ফেরটেরা (ডুপন্ড) ৪ কেজি অথবা প্রতি একরে ভার্টিকো (সিনজেন্টা) ২.৫ কেজি সারের সাথে। এই অনুপাত ব্যবহার করলে ২১ দিন পর্যন্ত শোষক পোকামাকড় থেকে সুরক্ষা পাওয়া যায়।

Sr .no	Disease/pest	Control	Quantity per liter of water
1	Thrips	Decis	01 ml/liter
		Delegate	01 ml/liter
2	Leaf Minor	Karate	01 ml/liter
		Tracer	0.5 ml/liter
3	Damping Off	Aliate	02 g/liter
		Redomil Gold	02 g/liter
4	Purple Blotch	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter
5	Cercospora Leaf Blight	SAAF	01 g/liter.
6	Smut	Blue Copper	02 g/liter
7	Black Mould	Bavistin	02 g/liter
8	Stemiphylium Blight	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Aliette	02 g/liter
9	White Rot	Natio	08 g/15lite
		Roko	01 g/liter.
10	Basal Rot	Dithane M-45	02 g/liter
11	Downey Mildew	Sectin	03 গ্রাg/liter
12	Powdery Mildew	Thionutri	02 g/liter
13	Anthracnose	Mancozeb.	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter

সেচ: মাটির ধরণ এবং জলবায়ুর উপর ভিত্তি করে সেচের পরিমাণ এবং ফ্রিকোয়েন্সি নির্ধারণ করুন। বীজ বপনের পরপরই প্রথম সেচ দিতে হবে এবং তারপর প্রয়োজন অনুসারে ১০-১৫ দিন অন্তর সেচ দিতে হবে।

আগাছা নিয়ন্ত্রণ: পেঁয়াজ গাছের শিকড় তুলনামূলকভাবে কম গভীরে যায়। তাই, বেশি গভীরে আগাছা দমন করা উচিত নয়। ভালো ফসলের জন্য ৩ থেকে ৪ বার আগাছা অপসারণ করা প্রয়োজন। ভেষজনাশকও ব্যবহার করা যেতে পারে।

শস্য সংগ্রহ: সঠিক সময়ে আগাছা দমন করা খুবই গুরুত্বপূর্ণ। যখন গাছের ৬০-৭৫% পাতা ঝরে পড়ে, তখন বোঝা যায় যে ফসল কাটার জন্য প্রস্তুত। পেঁয়াজ হাতে উপড়ে ফেলে ফসল কাটা হয়। ফসল কাটার পর, অপ্রয়োজনীয় আর্দ্রতা দূর করার জন্য ২-৩ দিন জমিতে রেখে দিন।
বিঃদ্রঃ: - উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষার উপর ভিত্তি করে। বিভিন্ন স্থানে বিভিন্ন আবহাওয়া, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরের তথ্য পরিবর্তিত হতে পারে।

Higeo®
ਮਾਰਕਫੀਲਡ ਐਗਰੋਟੈਕ
ਏ-12, ਐਡੀਸ਼ਨਲ। ਐਮ.ਆਈ.ਡੀ.ਸੀ., ਛ. ਸੰਭਾਜੀ ਨਗਰ ਰੋਡ, ਜਾਲਨਾ - 431 203 (ਐੱਮ. ਐੱਸ.) ਮੋਬਾਈਲ 9404470525

ਪਿਆਜ

ਕਿਸਮਾਂ:-ਬਸਵੰਤ-780, ਫੂਲੇ ਸਮਰਥ, ਨਾਸਿਕ ਰੈੱਡ, ਲਾਈਟ ਰੈੱਡ, ਪੁਨਾ ਫੁਰਸੁੰਗੀ, ਅਰਕਾ ਨਿਕੇਤਨ, ਸੁਪਰ ਪੁਨਾ ਫੁਰਸੁੰਗੀ, ਸੁਪਰ ਕੇਸਰ ਗੋਲਡ, ਭੀਮਾ ਸੁਪਰ, ਭੀਮਾ ਕਿਰਨ, ਐਸ - 11, ਐਸ - 21, ਐਸ - 51, ਵ੍ਹਾਈਟ ਗਲੋਬ, ਸੁਪਰਮਾ ਕਿੰਗਸ, ਸੁਪਰਮਾ ਕਿੰਗਸਲਾ, ਸੁਪਰ ਰੈੱਡ, ਧਨਵਾਨ, ਧਨਰਾਜ, ਬਲਵਾਨ, ਬਾਹੂਬਲੀ, ਬ੍ਰਹਮਾ, ਕਾਰਤਿਕ ਸੁਪਰ, ਮਹਾਰੁਦਰ ਪਾਵਰ ਗੋਲਡ ਪਲੱਸ, ਅਰਲੀ ਗੋਲਡ, ਅਰਲੀ ਪਲੱਸ ਸਾਰਥਕ ਪਿੰਕ ਫੁਰਸੁੰਗੀ ਗੋਲਡ ਪਲੱਸ, ਸਾਰਥਕ ਪਿੰਕ ਫੁਰਸੁੰਗੀ ਸੁਪਰ.ਬੇਨ

ਪਿਆਜ਼ ਲਈ ਜਲਵਾਯੂ: ਪਿਆਜ਼ ਦੀ ਫਸਲ ਨੂੰ ਇੱਕ ਅਜਿਹਾ ਜਲਵਾਯੂ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜੋ ਨਾ ਤਾਂ ਬਹੁਤ ਗਰਮ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਬਹੁਤ ਠੰਡਾ। ਲੰਬੇ ਦਿਨ ਅਤੇ ਕੁਝ ਹੱਦ ਤੱਕ ਉੱਚ ਤਾਪਮਾਨ ਚੰਗੇ ਬਲਬ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਵਧੀਆ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

ਢੁਕਵੀਂ ਮਿੱਟੀ; ਪਿਆਜ਼ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਹਰ ਕਿਸਮ ਦੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਪਿਆਜ਼ ਦੀ ਵੱਧ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪੈਦਾਵਾਰ ਲਈ, ਜੈਵਿਕ ਪਦਾਰਥ ਵਾਲੀ ਸਹੀ ਨਿਕਾਸੀ ਵਾਲੀ ਰੇਤਲੀ ਦੋਮਟ ਜਾਂ ਦੋਮਟ ਮਿੱਟੀ ਸਭ ਤੋਂ ਢੁਕਵੀਂ ਹੈ।

ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਤਿਆਰੀ: ਪਿਆਜ਼ ਦੀ ਚੰਗੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਲਈ, ਖੇਤ ਨੂੰ ਚਾਰ ਤੋਂ ਪੰਜ ਵਾਰ ਵਾਹੁਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਹਰ ਵਾਰ ਵਾਹੁਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਹਲ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਕੇ ਮਿੱਟੀ ਨੂੰ ਨਰਮ ਬਣਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਸਤ੍ਹਾ ਤੋਂ 15 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਉਚਾਈ 'ਤੇ 1.2 ਮੀਟਰ ਚੌੜੀ ਪੱਟੀ 'ਤੇ ਬਿਜਾਈ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ, ਖੇਤ ਨੂੰ ਉਭਾਰਿਆ-ਬੈੱਡ ਸਿਸਟਮ ਨਾਲ ਵੀ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਨਰਸਰੀ ਵਿੱਚ ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਦਾ ਸਮਾਂ
ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ - ਸਾਉਣੀ ਪਿਆਜ਼ ਲਈ, ਬੀਜ ਪੂਰੇ ਜੂਨ ਮਹੀਨੇ ਵਿੱਚ ਬੀਜੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਹਾੜੀ ਪਿਆਜ਼ ਲਈ, ਬਿਜਾਈ ਅੱਧ ਅਕਤੂਬਰ ਤੋਂ ਨਵੰਬਰ ਤੱਕ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਬੀਜਾਂ ਦੀ ਮਾਤਰਾ - ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ ਬਿਜਾਈ ਲਈ 8 ਤੋਂ 10 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਪੌਦੇ ਦੀ ਤਿਆਰੀ
ਉੱਭਰੇ ਹੋਏ ਬਿਜਾਈ ਵਾਲੇ ਖਾਦ ਅਤੇ ਖਾਦ: - ਫਰਟੇਰਾ (ਡੂਪੋਂਡ) 4 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਜਾਂ ਵਰਟੀਕੋ (ਸਿੰਜੈਂਟਾ) 2.5 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਖਾਦ ਦੇ ਨਾਲ ਵਰਤਣ ਨਾਲ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਰਸ ਚੂਸਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਸੁਰੱਖਿਆ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।

Sr No	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	At the time of transplantation	50	50	100
2	25-30 days after transplantation	25	00	00
3	25-30 days after second dose	25	00	00
	Total	100	50	100

ਬਿਮਾਰੀ ਅਤੇ ਕੀਟ ਨਿਯੰਤਰਣ ਰਸਾਇਣਕ ਦਵਾਈ ਦੀ ਖੁਰਾਕ ਅਤੇ ਸਮਾਂ:- ਫਰਟੇਰਾ (ਡੂਪੋਂਡ) 4 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਜਾਂ ਵਰਟੀਕੋ (ਸਿੰਜੈਂਟਾ) 2.5 ਕਿਲੋ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਖਾਦ ਦੇ ਨਾਲ। ਇਸ ਅਨੁਪਾਤ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨ ਨਾਲ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਚੂਸਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਸੁਰੱਖਿਆ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।

Sr .no	Disease/pest	Control	Quantity per liter of water
1	Thrips	Decis	01 ml/liter
		Delegate	01 ml/liter
2	Leaf Minor	Karate	01 ml/liter
		Tracer	0.5 ml/liter
3	Damping Off	Aliate	02 g/liter
		Redomil Gold	02 g/liter
4	Purple Blotch	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter
5	Cercospora Leaf Blight	SAAF	01 g/liter.
6	Smut	Blue Copper	02 g/liter
7	Black Mould	Bavistin	02 g/liter
8	Stemiphylium Blight	Dithane M-45	2.5 g/liter
		Aliette	02 g/liter
9	White Rot	Natio	08 g/15lite
		Roko	01 g/liter.
10	Basal Rot	Dithane M-45	02 g/liter
11	Downey Mildew	Sectin	03 ग्राg/liter
12	Powdery Mildew	Thionutri	02 g/liter
13	Anthracnose	Mancozeb.	2.5 g/liter
		Vespa + Kavach	01 ml + 03 g/liter

ਸਿੰਜਾਈ: ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਜਲਵਾਯੂ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਸਿੰਚਾਈ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਅਤੇ ਬਾਰੰਬਾਰਤਾ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰੋ। ਪਹਿਲੀ ਸਿੰਚਾਈ ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਤੁਰੰਤ ਬਾਅਦ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਫਿਰ ਲੋੜ ਅਨੁਸਾਰ 10-15 ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਾਲ 'ਤੇ ਸਿੰਚਾਈ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਰੋਕਥਾਮ: ਪਿਆਜ਼ ਦੇ ਪੌਦੇ ਦੀਆਂ ਜੜ੍ਹਾਂ ਮੁਕਾਬਲਤਨ ਘੱਟ ਡੂੰਘਾਈ ਤੱਕ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ, ਜ਼ਿਆਦਾ ਡੂੰਘਾਈ ਤੱਕ ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਨਹੀਂ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ। ਚੰਗੀ ਫਸਲ ਲਈ, 3 ਤੋਂ 4 ਵਾਰ ਨਦੀਨਾਂ ਨੂੰ ਹਟਾਉਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਜੜੀ-ਬੂਟੀਆਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵੀ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਫਸਲ ਦੀ ਕਟਾਈ: ਸਹੀ ਸਮੇਂ 'ਤੇ ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਨਿਕਾਸੀ ਕਰਨਾ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਪੌਦੇ ਦੇ 60-75% ਪੱਤੇ ਡਿੱਗ ਜਾਂਦੇ ਹਨ, ਤਾਂ ਇਹ ਦਰਸਾਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਫਸਲ ਕਟਾਈ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੈ। ਪਿਆਜ਼ ਨੂੰ ਹੱਥਾਂ ਨਾਲ ਉਖਾੜ ਕੇ ਫਸਲ ਦੀ ਕਟਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਕਟਾਈ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਬੇਲੋੜੀ ਨਮੀ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਲਈ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ 2-3 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਛੱਡ ਦਿਓ।

ਨੋਟ: - ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ ਵਿਖੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਮੌਸਮ, ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮ ਦੇ ਕਾਰਨ ਬਦਲ ਸਕਦੀ ਹੈ।